साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्योत्सव का चौथा दिन

राष्ट्रीय संगोष्ठी : गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव

गाँधी की कल्पना स्वाधीन मनुष्य की थी –– कृष्ण कुमार

नई दिल्ली, 18 फ़रवरी 2016 । साहित्योत्सव के चौथे दिन आज 'गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू : निरंतरता तथा अलगाव' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आरंभ हुआ। संगोष्ठी का उद्घाटन भारतीय इतिहास और संस्कृति की प्रख्यात अध्येता कपिला वात्स्यायन ने किया। उद्घाटन वक्तव्य में कपिला वात्स्यायन ने कहा कि गाँधी, अम्बेडकर और नेहरू एक ही समय के तीन बड़े नाम थे, जिन्होंने हमारे दिमागों को प्रभावित किया। नेहरू और अम्बेडकर गाँधी की छाया में रहे लेकिन उनके सोचने और समझने के तरीक़े भिन्न थे। जैसे कि अस्पृश्यता को लेकर अम्बेडकर का नज़रिया बिल्कुल अलग था। नेहरू पूर्व और पश्चिमी संस्कृति के संयोजक के रूप में देखे जा सकते हैं। उन्होंने कई उदाहरण देते हुए गाँधी, अम्बेडकर और नेहरू के व्यक्तित्व और सोच की विशिष्टता प्रर प्रकाश डाला।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि तीनों में भले ही कुछ मतभेद थे लेकिन उनका लक्ष्य एक था –– भारतवर्ष की उन्नति। नेहरू कभी कट्टर गाँधीवादी नहीं रहे। उन्होंने गाँधी को उद्धृत करते हुए कहा कि सत्य निर्गुण होता है, अज्ञेय होता है। सगुण और गेय तब बनता है जब सत्य अहिंसा का वस्त्र धारण करता है। उन्होंने अस्पृश्यता के संबंध में महात्मा गाँधी की उक्ति की याद दिलाई –– ''अस्पृश्यता को हिंदू धर्म अगर धार्मिक रूप देगा तो मैं हिंदू धर्म छोड़ दूँगा।'' उन्होंने आगे कहा कि गाँधी वर्णाश्रम के समर्थक थे। उनका मानना था कि वर्णाश्रम से जीविका की समस्या कुछ हल हो सकती है। अम्बेडकर वर्णाश्रम के सख़्त विरोधी थे। उन्होंने याद दिलाया कि 1932 में ब्रिटिश सरकार ने दलित और पिछड़े वर्ग के लिए अलग निर्वाचन के विरोध में आमरण अनशन किया और बहुत मशक्कत के बाद अम्बेडकर ने उनकी माँग के प्रति सहमति व्यक्त करते हुए पत्रावली पर हस्ताक्षर किए थे। उसके बाद गाँधी ने पूरे देश की यात्रा की थी, जिसका मूल उद्देश्य था –– अस्पृश्यता का विरोध।

उन्होंने कहा कि गाँधी विलक्षण भविष्य वक्ता हैं। उन्होंने गाँधी के प्रति विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि गाँधी और उनकी सोच लोगों को अव्यावाहारिक और तात्कालिक भले लगती हो

लेकिन उन्हें दुनिया के अनेक महान लोगों ने अपना रोल मॉडल स्वीकार किया है। गाँधी की प्रासंगिकता बनी रहेगी।

विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे प्रख्यात विद्वान एवं शिक्षाविद् कृष्ण कुमार ने कहा कि गाँधी की कल्पना स्वाधीन मनुष्य की थी यानी वे मनुष्य पर राज्य का नियंत्रण नहीं चाहते थे। वे चाहते थे कि हर व्यक्ति आत्मराज से संचालित हो यानी उस पर नियंत्रण के लिए कोई और तंत्र न हो। यह एक ऐसी कल्पना थी जिसको साकार करने की एक बड़ी पहल अम्बेडकर ने की। हालाँकि दोनों के सिद्धांत अलग–अलग थे। आगे उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता तभी संभव है जब शब्द स्वतंत्र होंगे। सच्ची स्वतंत्रता का सपना तभी सच होगा जब शब्दों को आज़ादी मिलेगी।

अपने बीज–वक्तव्य में प्रख्यात ओड़िया लेखक एवं अकादेमी के महत्तर सदस्य मनोज दास ने कहा कि विचार ही सबसे बड़ा होता है और इन तीनों महान चिन्तकों के विचारों ने ही आम जनता के बीच में अपनी पैंठ बनाई। बीसवीं शताब्दी के उथल–पुथल भरे वातावरण में इन तीनों के चिंतन ने ही शांति और समानता की बागडोर सँभाले रखी।

इसके पूर्व अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत किया। अपने स्वागत वक्तव्य में उन्होंने कहा कि गाँधी, अम्बेडकर और नेहरू आधुनिक भारत के निर्माता हैं। उन्होंने कहा कि ये तीनों ही महापुरुषों के पास एक राष्ट्र के निर्माण के लिए सम्यक दृष्टि थी। क्या हम जैसा गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू चाहते थे, वैसा राष्ट्र बना पाए हैं ? तीनों युगपुरुषों की सोच में क्या एकता है और विभिन्न मुद्दों पर क्या मतभेद हैं, इन्हें समझने के लिए इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। विभिन्न सत्रों में 'स्वतंत्रता और अहिंसा', पश्चिम के प्रति नज़रिया', 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता', 'स्त्री और समानता', 'जाति और समानता', 'भाषा का प्रश्न', 'अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक', 'संस्कृति और शिक्षा' तथा 'धर्म और लोकतंत्र' जेसे विषयों पर देश के प्रख्यात विद्वान अपने आलेख का पाठ करेंगे। हमारा उद्देश्य है कि युवा पीढ़ी इन तीनों महापुरुषों के व्यक्तित्व और विचारों को और ठीक से समझ पाए।

साहित्योत्सव में आयोजित एक अन्य कार्यक्रम 'आमने–सामने' में आज 7 पुरस्कृत लेखकों से प्रतिष्ठित साहित्यकारों और विद्वानों से बातचीत की। इस बातचीत से लेखकों की रचना प्रक्रिया के कई पहलू सामने आए। अरुण खोपकर से कुमार केळकर, के.आर. मीरा से मीना टी. पिळ्ळै, कुल सैकिया से स्तुति गोस्वामी, के.वि. तिरुमलेश से विवेक शनबाग, साइरस मिस्त्री से अर्शिया सत्तार, वोल्गा से जे.एल. रेड्डी और रामदरश मिश्र से सुरेश ऋतुपर्ण ने बातचीत की।

पूर्वोत्तरी कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात असमिया लेखक लक्ष्मीनंदन बोरा ने किया। इसमें पूर्वोत्तर और उत्तर भारत के लेखकों ने अपनी कहानी और कविताओं का पाठ किया।

शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत निज़ामी बंधुओं द्वारा कव्वाली की प्रस्तुति की गई।